स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

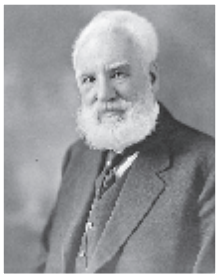

एलेक्ज़ेन्ड ग्राहम बेल का टेलीफोन के साथ पहला सफल प्रयोग

"Mr. Watson, come here. I want you." ये वे पहले शब्द थे जो 10 मार्च 1876 के दिन टेलीफोन पर बोले गए थे। बोलने वाले थे एलेक्ज़ेन्ड ग्राहम बेल और सुनने वाले थे उनके सहायक थॉमस वॉसन।

आज हमारे हाथों में स्मार्टफोन लहराते रहते हैं लेकिन क्या कभी आपने कल्पना की है कि जब टेलीफोन पर पहली आवाज़ गूंजी होगी तो उसके आविष्कारक का दिल कैसे बल्लियों उछला होगा? दरअसल, एलेक्ज़ेन्डर ग्राहम बेल बोस्टन में अपनी प्रयोगशाला में प्रयोग कर रहे थे। वहीं पास के कमरे में थॉमस वॉसन भी प्रयोग कर रहे थे। तभी वॉसन को प्रयोग के लिए लगाए गए यंत्र से आवाज़ आने लगी, "मि. वॉसन, यहां आओ, मुझे तुम्हारी ज़रूरत है।" यह आवाज़ बेल की थी जो उस यंत्र में से आ रही थी।

यह बेल का टेलीफोन के साथ पहला सफल प्रयोग था जिसे प्रयोगशाला की नोटबुक में 10 मार्च 1876 में रिकार्ड किया गया था। इसी दिन बेल ने अपने पिता को पत्र लिखकर अपनी इस सफलता के बारे में बताया। उन्होंने कहा था कि जैसे पानी और गैस की लाइनें होती हैं वैसे ही अब टेलीफोन के तार भी घरों पर लहराएंगे। अब दोस्तों से बात करने के लिए एक-दूसरे के घर जाने की ज़रूरत नहीं होगी, घर बैठे ही टेलीफोन के माध्यम से बात कर सकेंगे।

आपको यह जानकर भी आश्चर्य होगा कि पहला टेलीफोन तो वही था - माचिस के दो खोकों को एक धागे से जोड़कर बनाया गया उपकरण जिसमें एक खोके से मुंह लगाकर बोलने पर ध्वनि के कंपन धागे के माध्मय से दूसरे खोके तक पहुंच जाते थे। मुख्य अंतर यह है कि टेलीफोन में इन कंपनों को विद्युतीय संकेतों में बदल दिया जाता है।

वैसे बेल पहले व्यक्ति नहीं थे जिन्होंने टेलीफोन के बारे में सोचा या उसे बनाने की दिशा में प्रयोग किए थे। किंतु पहला कामकाजी उपकरण तो बेल ने ही बनाया और इसलिए उन्हें ही इसके आविष्कार का श्रेय जाता है।

प्रकाशक, मुद्रक अरविन्द सरदाना की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462011 से मुद्रित। सम्पादक: डॉ. सुशील जोशी